घमंड का सिर नीचा-पंचतंत्र

एक गांव में उज्वलक नाम का बढई रहता था । वह बहुत गरीब था । गरीबी से तंग आकर वह गांव छोडकर दूसरे गांव के लिये चल पडा । रास्ते में घना जंगल पडता था । वहां उसने देखा कि एक ऊंटनी प्रसवपीडा से तडफडा रही है । ऊँटनी ने जब बच्चा दिया तो वह उँट के बच्चे और ऊँटनी को लेकर अपने घर आ गया । वहां घर के बाहर ऊँटनी को खूंटी से बांधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया । ऊँटनी ने हरी-हरी कोमल कोंपलें खाईं । बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊंटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई । ऊँट का बच्चा भी बढकर जवान हो गया । बढई ने उसके गले में एक घंटा बांध दिया, जिससे वह कहीं खोया न जाय ।

दूर से ही उसकी आवाज सुनकर बढई उसे घर लिवा लाता था । ऊँटनी के दूध से बढई के बाल-बच्चे भी पलते थे । ऊँट भार ढोने के भी काम आने लगा ।

उस ऊँट-ऊँटनी से ही उसका व्यापर चलता था । यह देख उसने एक धनिक से कुछ रुपया उधार लिया और गुर्जर देश में जाकर वहां से एक और ऊँटनी ले आया । कुछ दिनों में उसके पास अनेक ऊँट-ऊँटनियां हो गईं । उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया । बढई का व्यापार चमक उठा । घर में दुधकी नदियाँ बहने लगीं ।

शेष सब तो ठीक था----किन्तु जिस ऊँट के गले में घंटा बंधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था । वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था । सब ऊँट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह सबको छोडकर अकेला ही जंगल में घूमा करता था ।

उसके घंटे की आवाज़ से शेर को यह पता लग जाता था कि ऊँट किधर है । सबने उसे मना किया कि वह गले से घंटा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना ।

एक दिन जब सब ऊँट वन में पत्ते खाकर तालाब से पानी पीने के बाद गांव की ओर वापिस आ रहे थे, तब वह सब को छोडकर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया । शेर ने भी घंटे

की आवाज सुनकर उसका पीछा किया । और जब वह पास आया तो उस पर झपट कर उसे मार दिया ।

सीख : घमंड का सिर नीचा ।

अनुवाद - कुलदीप धर

घमंड का सिर नीचा-पंचतंत्र

एक गांव में उज्ज्वलक नाम का बढ़ई रहता था। वह बहुत गरीब था। गरीबी से तंग आकर वह गांव छोड़कर दूसरे गांव के लिये चल पड़ा। रास्ते में घना जंगल पड़ता था। वहां उसने देखा कि एक ऊंटनी प्रसवपीड़ा से तड़फड़ा रही है। ऊंटनी ने जब बच्चा दिया तो वह ऊंट के बच्चे और ऊंटनी को लेकर अपने घर आ गया। वहां घर के बाहर ऊंटनी को खूंटी से बांधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया। ऊंटनी ने हरी-हरी कोमल कोंपलें खाईं। बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊंटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई। ऊंट का बच्चा भी बढ़कर जवान हो गया। बढ़ई ने उसके गले में एक घंटा बांध दिया, जिससे वह कहीं खोया न जाय।

दूर से ही उसकी आवाज सुनकर बढ़ई उसे घर लिवा लाता था। ऊंटनी के दूध से बढ़ई के बाल-बच्चे भी पलते थे। ऊंट भार ढोने के भी काम आने लगा।

उस ऊंट-ऊंटनी से ही उसका व्यापार चलता था। यह देख उसने एक धनिक से कुछ रुपया उधार लिया और गुर्जर देश में जाकर वहां से एक और ऊंटनी ले आया। कुछ दिनों में उसके पास अनेक ऊंट-ऊंटनियां हो गईं। उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया। बढ़ई का व्यापार चमक उठा। घर में दूध की नदियाँ बहने लगीं।

शेष सब तो ठीक था----किन्तु जिस ऊंट के गले में घंटा था, वह बहुत गर्वित हो गया था। वह अपने को दूसरों से विशेष

मभाएता था। मग ऊँए वन में पड़ पाने के एउँ उँ वह मग कें
छेड़कर ग्रकेला ही एंगल में घूमा करता था।

उसके थंए की ग्रुवाए में मेर कें यह पता लग एता था कि ऊँए
किधर हैं। मगने उसे भना किया कि वह गले में थंए उतार दे,
लेकिन वह नहीं माना।

एक दिन मग मग ऊँए वन में पड़ पाकर तालाब में पानी पीने
के बाद गांव की ओर वापिस ग्रा रहे थे, तब वह मग कें छेड़कर
एंगल की मैर करने ग्रकेला चल दिया। मेर ने ही थंए की
ग्रुवाए सुनकर उसका पीछा किया। ओर मग वह पास ग्राया उँ
उस पर एपए कर उसे मार दिया।
मीप : घमंड का मिर नीचा।

ग्रनुवाद - कुलदीप धर